युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 19 अंक 32 कुल पृष्ठ-8 20 से 26 मार्च, 2025 दयानन्दाब्द 200 सृष्टि सम्वत् 1960853125 सम्वत् 2081 फा. शु.-11

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती एवं आर्य समाज के स्थापना के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में

दिनांक - 7, 8 व 9 मार्च, 2025 (शुक्रवार, शनिवार व रविवार) को स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, आश्रम टिटौली (रोहतक) हरियाणा में

अन्तरराष्ट्रीय आर्य विद्वत् महासम्मेलन भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

आजादी के आंदोलन में आर्य समाज का सर्वाधिक योगदान - स्वामी रामदेव

आर्य समाज वसुधैव कुटुंबकम की भावना को प्रबल करेगा- स्वामी आर्यवेश

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वीं जन्म जयन्ती एवं आर्य समाज स्थापना के 150 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर
ओ३म्
आर्य समाज की भावी दिशा एवं कार्यशैली पर चिन्तन करने के लिए
राष्ट्रीय आर्य विद्वत् महासम्मेलन
आर्य समाज 150
7, 8 व 9 मार्च, 2025
ओ३म्

गरिमामई उपस्थिति : योग गुरु स्वामी रामदेव जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी आर्यवेश जी, चौ. रामवीर सिंह तोमर जी, प्रो. विट्ठलराव आर्य जी, स्वामी ओमवेश जी

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

स्वामी रामदेव जी से आर्य समाज को बहुत अपेक्षाएं हैं – स्वामी प्रणवानन्द
आर्य समाज के कार्यों के लिए सदैव समर्पित रहूंगा – स्वामी सुमेधानन्द
महर्षि दयानन्द के द्वारा दिखाये मार्ग पर चलना होगा – स्वामी ओमवेश
मनुष्य को यज्ञमय जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए – स्वामी वेदप्रकाश सरस्वती

ओ३म्
जी के 200वीं जन्म जयन्ती एवं समाज स्थापना के 150 वर्ष पूर्ण
आर्य समाज वी दिशा एवं क पर चिन्तन करने के लिए

द्रीय आर्य विद्वत् महास

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जन्म जयंती एवं आर्य समाज की स्थापना के 150 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय आर्य विद्वत् महासम्मेलन का भव्य समारोह रोहतक के टिटौली गांव स्थित स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम में संपन्न हुआ। इस महासम्मेलन में भारत सहित 9 देशों और 15 राज्यों से आए विद्वानों, संतों, आर्य समाज के प्रतिनिधियों एवं अनुयायियों ने भाग लिया। भारत के अतिरिक्त अमेरिका, जर्मनी, हॉलैंड, दक्षिण अफ्रीका, मॉरीशस, न्यूजीलैंड, केन्या, युगांडा, ओस्ट्रेलिया, कनाडा से प्रतिनिधि शामिल हुए। स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली एवं महर्षि दयानंद शोध पीठ यूजीसी रोहतक के संयुक्त तत्वावधान में सार्वदेशिक आर्य पुरोहित सभा नई दिल्ली, धर्म प्रतिष्ठान, मानव सेवा प्रतिष्ठान और वैदिक विरक्त मंडल एवं श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् के सहयोग से आयोजित किया गया। तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय आर्य विद्वत महासम्मेलन का भव्य शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन करके किया गया। इस अवसर पर पतंजलि योगपीठ के संस्थापक स्वामी रामदेव जी महाराज मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित होकर महासम्मेलन का उद्घाटन किया। इस महासम्मेलन में आर्य समाज के अनेक विद्वानों, विचारकों एवं प्रचारकों ने भाग लिया।

उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए स्वामी रामदेव जी ने कहा कि भारत की स्वतंत्रता संग्राम में आर्य समाज और ऋषि दयानंद के अनुयायियों का अतुलनीय योगदान रहा है। उन्होंने गुरु विरजानंद, स्वामी श्रद्धानंद, लाला लाजपत राय, चाचा अजीत सिंह, शहीद भगत सिंह और रामप्रसाद बिस्मिल जैसे क्रांतिकारियों को स्मरण करते हुए कहा कि इन महापुरुषों की प्रेरणा से हजारों लोगों ने अपने प्राणों की आहुति देकर देश को आजादी दिलाई। आज हम उन्हीं के बलिदानों के कारण स्वतंत्रता की हवा में सांस ले रहे हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने अपने संबोधन में कहा कि यह महासम्मेलन आर्य समाज की दशा और दिशा में सकारात्मक परिवर्तन लाने के उद्देश्य से आयोजित किया गया है। इस सम्मेलन के माध्यम से आर्य समाज के प्रत्येक वर्ग को लाभ पहुंचाने एवं समाज को एक नई दिशा देने का प्रयास किया जाएगा।

वैदिक विद्वान डॉ0 ज्वलंत कुमार शास्त्री ने कहा कि आगामी तीन दिनों तक देश–विदेश से आए विद्वान आर्य समाज के अगले 50 वर्षों की रूपरेखा तैयार करेंगे।

वरिष्ठ आर्य संन्यासी स्वामी प्रणवानंद जी ने कहा कि स्वामी दयानन्द के विचारों को और ज्यादा अपनाने की आवश्यकता है।

पूर्व सांसद स्वामी सुमेधानंद जी ने कहा की ऋषि दयानन्द का जीवन और उनके कार्य समाज को प्रेरणा देने वाले हैं।

अंतरराष्ट्रीय आर्य विद्वत् महासम्मेलन के दूसरे दिन विभिन्न सत्रों में आर्य समाज की विचारधारा, स्वतंत्रता संग्राम में इसकी भूमिका तथा आधुनिक समय में इसकी प्रासंगिकता पर गहन विचार–विमर्श के अतिरिक्त 8 मार्च महिला दिवस पर नारी सशक्तिकरण पर भी विशेष चर्चा की गई।

अन्तरराष्ट्रीय आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने महिला दिवस के अवसर पर बोलते हुए कहा कि महिलाओं के अधिकार के लिए सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द सरस्वती ने उनके हक एवं अधिकारों की वकालत की। स्वामी जी ने कहा कि महिलाएं दो कुलों को संस्कारित करने का कार्य करती हैं।

मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे क्रांतिकारी शहीदे आजम भगत सिंह के भतीजे श्री किरणजीत सिंह सिन्धु ने अपने संबोधन में बताया कि भगत सिंह तथा उनके पूरे परिवार का आर्य समाज से गहरा संबंध है और उन्होंने स्वामी दयानंद के विचारों से प्रेरणा लेकर देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राण न्यौछावर किए। उन्होंने आर्य समाज से प्रभावित अन्य क्रांतिकारियों को भी याद किया और उनके योगदान को रेखांकित किया।

अमेरिका से पधारे वैदिक विद्वान श्री रमेश गुप्ता ने विश्वभर में आर्य समाज के विस्तार पर प्रकाश डालते हुए बताया कि वर्तमान समय में भी गुरुकुल परम्परा की शिक्षाएँ प्रासंगिक हैं और गुरुकुल के विद्यार्थी समाज सुधार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

दक्षिण अफ्रीका से पधारीं पंडिता विजय लक्ष्मी ने डरबन में संचालित महिला आर्य समाज की गतिविधियों की जानकारी देते हुए बताया कि वहां महिला सशक्तिकरण तथा शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

इस सत्र का संयोजन मानव सेवा प्रतिष्ठान के कार्यकारी प्रधान श्री रामपाल शास्त्री ने बड़ी कुशलता के साथ किया।

डॉ. सुरेन्द्र कुमार पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार ने 'मनु स्मृति एवं आर्य समाज' पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि आर्य समाज ने मनु की मूल व्यवस्थाओं के अनुरूप जातिभेद–उन्मूलन और सबको शिक्षा के समान अधिकार दिलाने के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए हैं।

पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ के संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. वीरेंद्र अलंकार ने 'स्वामी दयानंद के वेद भाष्यों की ग्राह्यता एवं वैज्ञानिकता' पर अपने विचार

ओ३म्
महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वीं जन्म जयन्ती एवं आर्य समाज स्थापना के 150 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर
आर्य समाज की भावी दिशा एवं कार्यशैली पर चिन्तन करने के लिए
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य विद्वत् महासम्मेलन
आर्य समाज 150
200वीं
महर्षि दयानन्द सरस्वती

अन्तरराष्ट्रीय आर्य विद्वत् महासम्मेलन की चित्रमय झलकियाँ

ओ३म्
महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वीं जन्म जयन्ती एवं आर्य समाज स्थापना के 150 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर
आर्य समाज की भावी दिशा एवं कार्यशैली पर चिन्तन करने के लिए
आर्य समाज 150

आर्य विद्वत् महासम्मेलन

स्वामी इंद्रवेश जी महाराज
18वां बेटी बचाओ चतुर्वेद पारायण

अन्तरराष्ट्रीय आर्य विद्वत् महासम्मेलन की चित्रमय झलकियाँ

अन्तरराष्ट्रीय आर्य विद्वत् महासम्मेलन की चित्रमय झलकियाँ

की भावी दिशा एवं कार्यशैली पर चिन्तन

आर्य समाज की भावी दिशा एवं

न्ती एवं आर्य समाज स्थापना के

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वीं जन्म जयन्ती एवं आर्य

1825-2025
अन्तरराष्ट्रीय आर्य विद्वत् महासम्मेलन

अन्तरराष्ट्रीय आर्य विद्वत् महासम्मेलन की चित्रमय झलकियाँ

न्तरराष्ट्रीय आर्य विद्वत् महासम्मेलन
महर्षि दयानन्द
ओ३म्
ANAND SOUND

शहीदों के सपनों को साकार करने के लिए युवाजन आगे आयें – स्वामी आदित्यवेश

भारतीय नव–जागरण के पुरोधा थे महर्षि दयानन्द सरस्वती – चौ. रामवीर सिंह तोमर

वैदिक सत्य सनातन संस्कृति के लिए कार्य करता रहूंगा – ठा. विक्रम सिंह

आर्य समाज में युवाओं को लाना अत्यन्त आवश्यक – अनिल आर्य

प्रस्तुत किए। उन्होंने बताया कि स्वामी दयानंद के वेद भाष्य वैज्ञानिक दृष्टिकोण से लिखे गए हैं और आधुनिक समय में भी प्रासंगिक है।

इस सत्र की अध्यक्षता कर रहे आर्य समाज के भामाशाह ठाकुर विक्रम सिंह ने कहा कि इस अंतरराष्ट्रीय आर्य विद्वत् महासम्मेलन के माध्यम से आर्य समाज के प्रचार–प्रसार को और अधिक गति मिलेगी तथा समाज के सभी वर्गों तक इसके संदेश को पहुंचाया जाएगा।

महर्षि दयानन्द शोध पीठ एम.डी.यू. के अध्यक्ष डॉ. रवि प्रकाश ने 'विदेशी लेखकों की दृष्टि में महर्षि दयानन्द' विषय पर व्याख्यान देते हुए बताया कि महर्षि दयानन्द के सुधारवादी विचारों ने न केवल भारत में, बल्कि विदेशों में भी विद्वानों का ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने उदाहरण सहित बताया कि मैक्स मूलर जैसे विदेशी लेखकों ने महर्षि दयानन्द के विचारों की गहरी सराहना की। उन्होंने यह भी बताया कि कैसे 'सत्यार्थ प्रकाश' को पश्चिमी बुद्धिजीवियों ने भारतीय पुनर्जागरण का आधार बताया।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय महासचिव स्वामी आदित्यवेश ने महासम्मेलन की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि इस आयोजन से न केवल आर्य समाज की विचारधारा को मजबूती मिलेगी, बल्कि यह समाज सुधार और आध्यात्मिक उन्नति के मार्ग को भी प्रशस्त करेगा।

स्वामिनि वेदवती जी ने कहा कि आज हमारा सौभाग्य है कि मैं यहाँ स्वामी रामदेव जी महाराज के साथ इस महासम्मेलन में आ सकी। महर्षि देव दयानंद जी हम सभी को जो निर्देश देकर गये हैं उसे आज हम अपने गुरु स्वामी रामदेव जी महाराज के निर्देशन में पतंजलि योग पीठ के माध्यम से आगे बढ़ा रहे हैं।

डॉ. सूर्या देवी चतुर्वेदी ने 'वैदिक त्रैतवाद की सरल व्याख्या' विषय पर अपने विचार रखते हुए त्रैतवाद (ईश्वर, जीव और प्रकृति) की व्याख्या की। उन्होंने कहा कि यह दर्शन संतुलन और आत्मा की मुक्ति पर आधारित है। उन्होंने बताया कि महर्षि दयानंद ने त्रैतवाद को अपने विचारों का आधार बनाया और इसे सरल भाषा में प्रस्तुत किया, जिससे आमजन इसे सहजता से समझ सके।

डॉ. सुमेधा आचार्या ने 'जीवन में संस्कारों का महत्व' विषय पर बोलते हुए बताया कि संस्कार मनुष्य के जीवन का आधार हैं। उन्होंने वेदों में वर्णित सोलह संस्कारों की व्याख्या करते हुए बताया कि कैसे ये संस्कार व्यक्ति के चरित्र निर्माण में सहायक होते हैं। उन्होंने कहा कि यदि इन संस्कारों को सही प्रकार से अपनाया जाए, तो समाज में नैतिक मूल्यों की स्थापना हो सकती है।

पद्मश्री सुकामा आचार्या ने 'वेदों में नारी का महत्व' विषय पर अपने विचार रखते हुए बताया कि प्राचीन भारतीय समाज में महिलाओं को सम्मान एवं शिक्षा का अधिकार प्राप्त था। उन्होंने वेदों के अनेक उद्धरण देते हुए बताया कि स्त्रियों को ऋषिका, शिक्षिका और नेतृत्वकर्ता के रूप में प्रतिष्ठा दी गई थी। उन्होंने कहा कि आधुनिक समय में महिला सशक्तिकरण के लिए वेदों की शिक्षाओं को पुनः अपनाने की आवश्यकता है।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य ने कहा कि हमें आगे क्या करना है इस पर विशेष रूप से विचार करने की आवश्यकता है। आर्य समाज कोई मठ, सम्प्रदाय नहीं है, यह एक आंदोलन है। हमें नए लोगों को जोड़ने का प्रयास करना होगा और युवाओं को आगे लाना है। राजनीतिक लोगों ने देश में पाखण्ड को बढ़ावा दे रहे हैं, इसलिए आर्य समाज को आगे आकर नेतृत्व करना चाहिए। सबसे पहले अपने परिवार को जोड़ें उसके बाद अन्य लोगों को जोड़ें। शहीदों के सपनों का भारत बनाने के लिये कार्य करें।

डॉ. सुखदा सोलंकी ने कहा कि आज मैं जो कुछ भी हूँ वह महर्षि दयानन्द जी की वजह से हूँ। उन्होंने हम सभी महिलाओं के लिए बहुत काम किया और अधिकार सम्पन्न बनाया। आज उन्हीं की देन है जो हम गुरुकुल में अपनी सेवाएं दे पा रही हूं। लड़के और लड़कियों के विवाह की आयु पर विस्तार से चर्चा की और अनेक उदाहरणों से सभी को भाव विभोर कर दिया।

डॉ नरेश धीमान ने कहा कि आज श्री कैलाश सत्यार्थी जी का उद्बोधन हम सबको सच्चाई दिखाता है। उन्होंने कहा कि जबसे कलकुलेटर आया तबसे हमारी जोड़ने की क्षमता खत्म होने लगी। उसी तरह से अब ए.आई. आया जो पूरे समाज के ताने बाने को खत्म कर देगा। यह हमारी बौद्धिक क्षमता को खत्म कर देगा।

इस महासम्मेलन में देश–विदेश से पधारे अनेक विद्वानों ने अपने–अपने विचार प्रस्तुत किये। विद्वानों ने एकमत होकर यह संकल्प लिया कि आर्य समाज के सिद्धांतों को जन–जन तक पहुंचाने के लिए सामूहिक प्रयास किए जाएंगे और नारी सशक्तिकरण तथा सामाजिक सुधार के माध्यम से और अधिक प्रभावशाली बनाया जाएगा।

महासम्मेलन के अंतिम दिन नोबेल पुरस्कार विजेता श्री कैलाश सत्यार्थी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि जब भी मैं आर्य समाज के मंच पर आता हूँ तो मुझे लगता है मैं अपनी माँ की गोद में आ गया हूं। उन्होंने आगे कहा कि मैंने ज़ब अपना नोबल शांति पुरुष्कार राष्ट्र को समर्पित किया तो उसकी प्रेरणा मुझे ऋषि दयानन्द से मिली। ऋषि दयानन्द वो आग थे जिसने समाज से अज्ञान, अंधकार और अन्याय को जलाकर राख़ कर दिया। उन्होंने बढ़ते बाल यौन अपराध पर चिंता जताई। सभी आयोजकों ने उनका स्वागत किया।

इस महासम्मेलन में विभिन्न देशों से आए विद्वानों ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारों पर प्रकाश डाला।

आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के महामंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य ने बताया कि कैसे दयानन्द सरस्वती ने समाज को रूढ़ियों से मुक्त कर एक वैज्ञानिक और तार्किक दृष्टिकोण प्रदान किया। उनके "सत्यार्थ प्रकाश" जैसे ग्रंथ आज भी सामाजिक सुधार और भारतीय संस्कृति के पुनरुद्धार के लिए मार्गदर्शक हैं।

नाड़ी वैध कायाकल्प के संस्थापक वैद्य सत्यप्रकाश आर्य ने कहा की आगामी युग आयुर्वेद का है।

आर्य समाज की भावी दिशा एवं कार्यशैली पर चिन्तन करने के लिए
आर्य विद्वत् महासम्मे

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- ***www.facebook.com/SwamiAryavesh*** व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
दूरभाष : 011-23274771, 42415359

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

आर्य समाज का मंच मेरे लिए माँ की गोद जैसा – कैलाश सत्यार्थी

आर्य समाज के कार्य को तीव्र गति प्रदान करना लक्ष्य – प्रो. विट्ठलराव आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती महान् दार्शनिक थे – डॉ. रवि प्रकाश

आर्य समाज अपने आगमी 50 वर्षों के लिए करेगा मंथन – डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री

पूर्व आईपीएस डॉ. आनंद कुमार ने कहा कि इस महासम्मेलन ने यह संदेश दिया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचार केवल भारत तक सीमित नहीं, बल्कि संपूर्ण विश्व के लिए प्रासंगिक हैं।

आर्य समाज को मिले चार नए संन्यासी

ऋषि के जन्म जयंती पर अपना पूरा जीवन समर्पित करने का लिया निर्णय। इस महासम्मेलन की एक विशेष उपलब्धि रही चार संन्यास दीक्षाएँ, जो कि आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी द्वारा संपन्न कराई गई। उन्होंने दीक्षित संन्यासियों को वैदिक सिद्धांतों के अनुसार जीवन जीने की प्रेरणा दी और उन्हें आर्य समाज की सेवा में अपना जीवन समर्पित करने का संकल्प दिलाया। महाराष्ट्र के शिवाजी राव शिंदे एडवोकेट संन्यास के बाद स्वामी शिवारूद्रवेश बने जबकि मध्यप्रदेश के महेंद्र सिंह स्वामी महेंद्रानंद, आगरा के दिव्यमुनी स्वामी दिव्यानंद तथा सत्यमुनी अब स्वामी सत्यानंद बने। उन्होंने कहा कि आगामी शताब्दी ऋषि दयानन्द के विचारों को और ज्यादा मजबूती से लागू करने की है। समाज में व्याप्त अंधविश्वास, जातिवाद और धार्मिक कट्टरता को समाप्त करके वसुधैव कुटुंबकम की भावना को प्रबल करना है

अंतरराष्ट्रीय वैदिक परिषद् की स्थापना

महासम्मेलन के दौरान अंतरराष्ट्रीय वैदिक परिषद् के गठन की घोषणा की गई। इस परिषद का उद्देश्य संपूर्ण विश्व में वेदों के ज्ञान का प्रसार करना और वैदिक परंपराओं को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से स्थापित करना होगा।

वैदिक विचारों और शिक्षाओं के प्रचार–प्रसार को और अधिक प्रभावी बनाने के उद्देश्य से डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने शास्त्रार्थ महारथी महाविद्यालय की स्थापना का प्रस्ताव रखा और सभी विद्वानों ने इसको स्वीकार किया। यह महाविद्यालय वैदिक ज्ञान, दर्शन, संस्कृत और योग के अध्ययन के लिए समर्पित होगा।

स्वामी आर्यवेश जी तथा प्रो. विट्ठलराव आर्य के मार्ग दर्शन में स्वामी आदित्यवेश, बहन प्रवेश आर्या, बहन पूनम आर्या, सज्जन राठी, अशोक आर्य, रामपाल शास्त्री, अजयपाल आर्य, प्रदीप कुमार, धर्मेंद्र पहलवान, अवनीश आर्य, हरपाल आर्य, घनश्याम मुरारी, विष्णुपाल, जावेद, अशोक वशिष्ठ, ललनराय आदि ने कठोर मेहनत की तथा कार्यक्रम की सफलता में दिन रात एक कर दिया। आयोजक मंडल ने कार्यक्रम में शामिल हुए समस्त आर्य संन्यासियों, आर्य विद्वानों, विदुषी बहनों, गुरुकुल के आचार्यगण, धर्माचार्य, युवा कार्यकर्त्ता तथा आर्य वीरांगना बहनों तथा आर्य नेताओं एवं अतिथियों का धन्यवाद प्रकट किया। यह तीन दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय आर्य विद्वत् महासम्मेलन भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।

शेष अगले अंक में

ओ३म्
महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वीं जन्म जयन्ती एवं आर्य समाज स्थापना के 150 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर
आर्य समाज की भावी दिशा एवं कार्यशैली पर चिन्तन करने के लिए
आर्य समाज 150

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व सम्पादक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा मुद्रक - थॉमस पुलटू एवं मुद्रणालय - ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771, 42415359)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : ***sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com*** वैबसाइट : ***www.vedicaryasamaj.com***

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।